COTTON Innovate
Weekly Newsletter from Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Issue 2, Volume 7, July 2017 A weekly newsletter from ICAR-CICR

ICAR-CICR, Nagpur participates in 'Textile India 2017'

ICAR-CICR, Nagpur participated in the three day global textile and handicrafts event "**Textile India 2017**" organized at Gandhinagar, Gujarat from 30th June to 2nd July, 2017. Honourable Prime Minister, Shri. Narendra Modi inaugurated the mega trade event at Mahatma Mandhir, Gandhinagar on 30th June, 2017. Honourable Textile Minister, Smt. Smriti Irani, Honourable Minister for Agriculture and Farmers Welfare, Shri. Radha Mohan Singh, Chief Ministers of Gujarat and Andhra Pradesh, other ministers, representative from different private textile industries and foreign delegates attended the inaugural ceremony. Dr. Saravanan, M., Scientist (ICAR-CICR), Dr. S. S. Patil, SMS (KVK ICAR-CICR), Dr. U. V. Galkate, SMS (KVK ICAR-CICR) attended the event and explained about various exhibits displayed by CICR in the three days programme.. Posters, pamphlets, displays about successful stories, Bt detection kits, colour cotton materials including seeds, bolls, lint and jackets were displayed in the exhibition stall. Honourable Agricultural Minister, Shri. Radha Mohan Singh visited the stall and appreciated all the activities of the institute, including the jacket made from natural eco-friendly coloured cotton developed at the institute. Different stakeholders of textile industry visited the stall of ICAR-CICR and appreciated the efforts of the institute in service and welfare of cotton farmers. Dr. S. M. Wasnik, Principal Scientist, Extension Coordinated the activities.

Additional Director General (Cash Crop) Visited CICR, Regional Station, Sirsa

Additional Director General ADG (CC) ICAR, Dr R.K.Singh, visited ICAR-CICR Regional Station, Sirsa on 6th July, 2017. During the visit, various trials on AICRP on cotton, Bt hybrids trial and a Zonal trail on Bt prominent Bt cotton hybrids were supervised by the team. The team also visited the demonstrations on various technologies released by ICAR-CICR Regional Station Sirsa

At farmers field location

At Experimental area of ICAR-CICR RSSirsa

Visit to FLD at farmer fields at village Nejadela

Meeting with scientists

One Day Training programme cum exposure visit on "IPM in cotton" organized at ICAR- CICIR-Regional Station Sirsa

A one day Training programme on "Integrated Pest Management in cotton" was organized for Agriculture Officers from Agricultural Department Haryana at ICAR- Central Institute for Cotton Research Regional Station, on 11 July, 2017. Dr. Rishi Kumar, Principal Scientist (Entomology) delivered the information on Identification of cotton insect-pests and their Integrated Pest management. Field exposure visit was also arranged for officers trainee by Dr. Rishi Kumar on the cotton varieties/hybrids & technologies developed by ICAR-CICR. Dr. SK Sain delivered the lecture topics on "Disease management in Cotton with special focus on root rot and wilt". The participants were also provided information on Low-cost on-farm production technique for Trichoderma. A total of 25 Agricultural Officers' and extension personals from different districts of Haryana participated in this training.

Meetings attended/ Student's Visit

- Dr. D. Monga, Head, CICR RS, Sirsa, Dr. Blaise, Head (Acting), Crop Production, Dr. Nandini G Narkhedkar, I/C Head, Crop Protection, and Dr. R. B. Singandhupe, I/C KVK attended the Textile India 2017 held at Gandhinagar, Gujarat. They actively participated in the discussions following the presentations done during the Conference on "Low Productivity Challenges of the Fibres" held at Seminar Hall 3 of Mahatma Mandir on 2nd July 2017. The session was chaired by Sh. Radha Mohan Singh, Hon'ble Minister, Agriculture and Farmers Welfare and was presided by Smt. Smirti Irani, Hon'ble Minister of Textiles.
- As a part of their curriculum, a total of 129 students of II year B. Sc (Ag) from Agricultural College and Research Institute, Madurai visited ICAR-CICR, Regional Station, Coimbatore on 13.07.2017. The activities, achievements and technologies developed at ICAR-CICR, Regional Station, Coimbatore were explained by Dr (Mrs) S. Usha Rani, Principal Scientist (Agricultural Extension) to the students.

News Paper Coverage

कपास सीजन : फसल के बेहतर उत्पादन के लिए बढ़ा दें निगरानी

पौधे के तीन पत्तों पर सफेद मक्खी 18 या ज्यादा हों तो कृषि अधिकारी से करें संपर्क

जलभराव हो तो खेत से तुरंत निकासी का करें इंतजाम

एग्रो भास्कर | सिरसा

कपास खरीफ की नकदी फसल है। इस बार प्रदेश में 6.56 लाख हेक्टेयर में कपास की बिजाई की गई है। केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान के सिरसा स्थित क्षेत्रीय स्टेशन की रिपोर्ट के अनुसार फिलहाल पूरे उत्तरी भारत में इस बार कपास की फसल अच्छी स्थिति में है। अभी यह फसल सिर्फ दो माह की ही हुई है। इस पर सफेद मक्खी का हमला न हो, इसलिए इसके रखरखाव के लिए नियमित निगरानी और सतर्कता बरतने की जरूरत है। फिलहाल यह देखने में आया है कि मानसून समय पर आया है और फसल को भरपूर पानी भी मिल गया है। जितना पानी पूरे जून माह में मिलना था, वह हालांकि दो से तीन दिनों में फसलों को मिला है। अब तक की रिपोर्ट पर गौर किया जाए तो कपास की फसल खूब लहलहा रही है और किसी तरह की बीमारी का असर नहीं हुआ तो फसल के बंपर होने के आसार हैं।

कपास की फसल में बरसाती पानी का भराव न रहने दें

कपास की हिफाजत के लिए नियमित निगरानी और सतर्कता जरूरी है। अगर और बरसात हो तो यह ध्यान रखना जरूरी है कि फसल में बरसाती पानी का भराव लंबे समय तक न हो, पानी का निकास जल्द करा देना चाहिए। फसल पर सफेद मक्खी का प्रकोप भी नहीं है। अगर कपास के पौधे के तीन पत्तों पर सफेद मक्खी की संख्या कुल 18 या इससे ज्यादा होने लगे तो तुरंत एक्शन मोड में आ जाना होगा। केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों से संपर्क कर सकते हैं।

-डॉ. दिलीप मोंगा, समन्वयक, केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, क्षेत्रीय स्टेशन, सिरसा।

प्रदेश में अबकी बार 6.56 लाख हेक्टेयर में है कपास की फसल

सफेद मक्खी के हमले को लेवल की जांच करते रहना जरूरी

कपास की फसल पर सफेद मक्खी का हमला किस लेवल का है, इस पर बराबर नजर रखनी चाहिए। इसके लेवल की जांच नियमित रूप से करते रहना चाहिए। केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र के कपास विशेषज्ञों की मानें तो इस वक्त कपास की फसल पर सफेद मक्खी का हमला न के बराबर ही है। फसल के तीन पत्तों यानि ऊपर, बीच और नीचे वाले पत्ते पर सफेद मक्खी की संख्या छह-छह या इससे ज्यादा होने लगे तो समझ लीजिए कि सफेद मक्खी के हमले का लेवल बढ़ने लगा है। सफेद मक्खी का लेवल तीनों पत्तों पर 10 तक है तो वह लेवल सामान्य है, अगर यही लेवल 10 से 18 तक पहुंच जाए तो फसल को नुकसान का खतरा मंडराना शुरू हो जाता है।

ऐसे की जा सकती है निगरानी

• उर्वरकों का संतुलित - प्रयोग करना चाहिए, इससे मिलेगा काफी फायदा

• खेत की मेड़ों- को खरपतवार मुक्त रखने में से बढ़ेगा उत्पादन

• सफेद मक्खी की निगरानी के लिए कपास और दूसरे पौधे जैसे सब्जियां, फूलों वाले सजावटी पौधे, खरपतवार, पौधरोपण, फसलों इत्यादि का नियमित सर्वेक्षण करें और कपास की फसल के आसपास यदि बैंगन, भिंडी, मिर्च, टमाटर या कद्दू जाति की सब्जियां लगी हैं तो उन पर सफेद मक्खी की ठीक तरह से निगरानी और नियंत्रण करना चाहिए।

• कपास के लिए उर्वरकों की संतुलित मात्रा का प्रयोग करें। फसल में नाइट्रोजन आधारित ज्यादा खादों का प्रयोग न करें। अमेरिकन कपास की हाईब्रिड किस्म के लिए यूरिया 120-140 किलोग्राम, डीएपी 25-50 किलोग्राम और म्यूरेट पोटाश 20-40 किलोग्राम, जिंक 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से मिट्टी परीक्षण रिपोर्ट के आधार पर डालें। आधी यूरिया खाद की मात्रा फूल डोडी बनने तक तथा आधी फूल से टिंडे बनने तक डालें।

• अमेरिकन कपास की किस्मों के लिए 65 किलोग्राम यूरिया (देसी कपास की किस्मों के लिए 35 किलोग्राम यूरिया), 27 किलोग्राम डीएपी, 20 किलोग्राम म्यूरेट पोटाश और 10 किलोग्राम जिंक का प्रयोग करें।

• कपास के पौधों पर फूल लगना आरंभ होने पर पोटाशियम नाइट्रेट (13:0:45) का 2 से 4 बार छिड़काव 2.0 किलोग्राम/100 लीटर पानी में घोलकर 7 से 10 दिन के अंतराल पर करें।

• खेतों व खेतों की मेड़ें, रास्तों और खेत के आसपास के क्षेत्र को खरपतवारों से मुक्त रखें।

• कपास की फसल के खेतों के चारों तरफ ज्वार या बाजरा की दो लाइन पंक्तियों में बिजाई भौतिक अवरोधक के रूप में करें।

• कपास की फसल में जुलाई और अगस्त महीनों के दौरान प्रति एकड़ 50-100 पीले चिपकी ट्रेप (पीसीआई निर्मित या अन्य कम कीमत वाले ट्रेप) की स्थापना करें और अगस्त माह में वेक्यूम सक्शन ट्रेप का उपयोग सफेद मक्खी के वयस्कों की संख्या अधिक होने पर करें।

• सफेद मक्खी के प्रकोप को कम करने के लिए शुरू में दो छिड़काव 1.0 प्रतिशत नीम तेल और 0.1 प्रतिशत कपड़े धोने का पाउडर के घोल अथवा निंबिसिडिन (0.03 प्रतिशत या 300 पीपीएम) लीटर प्रति एकड़ और बाद में दो छिड़काव 2 प्रतिशत अरंडी तेल और 0.1 प्रतिशत कपड़े धोने के पाउडर के घोल के करें।

• अगस्त माह में कीटनाशक जैसे डाइफेन्थ्यूरॉन (200 ग्राम प्रति एकड़), ब्यूप्रोफेजिन (320 मिली लीटर प्रति एकड़), स्पाइरोमेसिफेन (200 मिली लीटर प्रति एकड़) और पाइरीप्रोक्सिफेन (400-500 मिली लीटर प्रति एकड़), का छिड़काव आवश्यकता पड़ने पर कर सकते हैं। फसल की अंतिम अवस्था में सितंबर के दौरान, इथियोन (800 मिली लीटर प्रति एकड़) एवं ट्राइएजोफास (600 मिली लीटर) का छिड़काव ज्यादा जरूरत के आधार पर करें।

• यदि पत्तों के निचले भाग में सफेद मक्खी के अंडे और उसके बच्चों की संख्या अधिक है तो स्पाइरोमेसिफेन (200 मिली लीटर प्रति एकड़) या पाइरीप्रोक्सिफेन (400-500 मिली लीटर प्रति एकड़) का प्रयोग अधिक लाभकारी होगा।

Produced and Published by: Dr. M. S. Ladaniya, Director, CICR, Nagpur
Chief Editor : Dr. S. M. Wasnik
Associate Editor, design & Media Support : Dr. M. Sabesh
Editors: Dr Dipak Nagrale, Dr H. B. Santosh, Dr D. Kanjana , Dr Rakesh Kumar & Dr Pooja Verma,

Citation : Cotton Innovate, Issue-2, Volume-7, 2017, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur.

Publication Note: This Newsletter presented online at http://www.cicr.org.in/cotton_innovate.html

Cotton Innovate is the Open Access CICR Newsletter

The Cotton Innovate – is published weekly by ICAR-Central Institute for Cotton Research
Post Bag No. 2, Shankar Nagar PO, Nagpur 440010
Phone : 07103-275536; Fax : 07103-275529;
email: cicrnagpur@gmail.com, director.cicr@icar.gov.in